उपेक्षा आयु कम करती है

हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि जो छोटे बच्चे बचपन का काफी समय किसी संस्थागत परिवेश में व्यतीत करते हैं, उनके टीलोमीयर उन बच्चों से छोटे होते हैं जिन्हें व्यक्तिगत परवरिश मिली हो। टीलोमीयर हमारे गुणसूत्रों के सिरों पर स्थित खंड होते हैं जिनकी लंबाई हर कोशिका विभाजन के बाद कम होती जाती है और यह लंबाई एक हद से कम हो जाए तो कोशिका विभाजन रुक जाता है। वयस्कों में टीलोमीयर की घटती लंबाई का सम्बंध बुढ़ाने की प्रक्रिया से देखा गया है।

बोस्टन के बाल अस्पताल के चार्ल्स नेल्सन और उनके साथियों द्वारा रोमानिया के 100 बच्चों पर किए गए इस अध्ययन में यह बात सामने आई कि 5 वर्ष से कम उम्र में बच्चे जितना अधिक समय संस्थागत अनाथाश्रम में बिताते हैं, उनके टीलोमीटर उतने ही छोटे होते हैं। बचपन के प्रतिकूल हालात व्यक्ति के गुणसूत्रों को प्रभावित करते हैं।

पूर्व में किए गए अध्ययनों से भी पता चला था कि बचपन में झेले गए तनाव का असर टीलोमीयर की लंबाई पर होता है, मगर उन अध्ययनों में बचपन के तनाव की बात स्वयं बच्चे द्वारा बताई गई बातों पर आधारित थी।*मॉलीक्यूलर साइकिएट्री* में प्रकाशित उपरोक्त अध्ययन इसी बात को संस्थागत अनाथाश्रम की परिस्थितियों से जोड़कर देखता है। ऐसी परिस्थितियों में बच्चे प्रायः उपेक्षा का शिकार होते हैं।

नेल्सन व साथियों ने अनाथाश्रम में रह रहे 6 माह से ढाई वर्ष उम्र के बच्चों को बेतरतीबी से दो समूहों में बांट दिया। एक समूह के बच्चों को अनाथाश्रम में ही रखा गया जबकि दूसरे समूह के बच्चों को घरों में परवरिश मिली। इसके 6 साल बाद और 10 साल बाद इन बच्चों के गाल की कोशिकाओं के टीलोमीयर की लंबाई का मापन किया गया। पाया गया कि संस्थागत परिवेश में रहे बच्चों के टीलोमीयर घरों में पले बच्चों की अपेक्षा उल्लेखनीय रूप से छोटे थे। यह भी पता चला कि दोनों ही समूहों में टीलोमीयर की लंबाई का सम्बंध 54 माह की उम्र से पूर्व अनाथाश्रम में बिताए गए समय से दिखता है। दरअसल नेल्सन व उनके साथी संस्थागत परिवेश में परवरिश के तंत्रिका वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक असर का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे हैं। वे यह देखना चाहते हैं कि शुरुआती परवरिश की परिस्थिति पूरे जीवन पर कैसे असर डालती है। अन्य शोधकर्ताओं का कहना है कि यह अध्ययन अभी बहुत कम बच्चों पर किया गया है, इसलिए एकदम निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। साथ ही सभी सहमत हैं कि यह अध्ययन जो संकेत उपलब्ध कराता है, उन पर आगे अध्ययन करने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***